08.02.76 की अव्यक्त वाणी
पर आधारित योग अनूभूति

कनेक्शन और करेक्शन के बैलेन्स
का अनुभव

➢➢ जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति बढ़ाने का अनुभव

➳ _ ➳ सारी शक्तियों को स्वयं में धारण करना

→ अपने आप को सूक्ष्म वतन में बापदादा के सामने देखे

→ बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है

→ उनके वरदानी हस्त से एक एक लाइट का हाथ निकल रहा है

→ एक हाथ निकल रहा है सहन शक्ति का

→ एक समाने की शक्ति का

→ एक परखने की शक्ति का

→ एक निर्णय शक्ति का

→ एक सामना करने की शक्ति का

→ एक सहयोग शक्ति का

→ एक विस्तार को संकिर्ण करने की शक्ति का

→ और एक समेटने की शक्ति का

- मैं अष्ट भुजाधारी दुर्गा हुँ
- अष्ट विनायक गणेश हुँ
- जिस शक्ति की जब जरूरत पड़ती है वह शक्ति अपने आप कार्य करती है , मुझे सफलता दिलाती है
- जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, तो वैसे अपने शक्तिशाली रूप को बना सके

➳ _ ➳ साक्षीदृष्टा स्थिति

- वर्तमान समय में चारों ओर हलचल है
- इस पुरानी दुनिया के विनाश का समय नज़दीक होता जा रहा है
- महाविनाश और विश्व परिवर्तन का कार्य चल रहा है
- दिन-प्रतिदिन प्रकृति विकराल रुप धारण करेगी
- प्रकृति के पाँच तत्वों के साथ, पाँच विकार भी फुल फोर्स में वार करेंगे
- इन परिस्थितियों का सामना करने कि शक्ति मुझे मिलगयी
- अब से मैं साक्षीदृष्टा बन गई

→ बेहद के ड्रामे को साक्षी होकर देख रही हूँ

→ चाहे दर्दनाक सीन हो या हँसी का हो

→ चाहे कोई का रमणीक पार्ट हो, चाहे स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट हो

- अब मुझ आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है
- मैं आत्मा हर किसी के पार्ट को साक्षीदृष्टा होकर देख रही हूँ
- बेहद के बाप द्वारा रचा बेहद का ड्रामा बिल्कुल एक्युरेट है
- बाहर कितनी भी हलचल हो मैं आत्मा बिल्कुल शांत हो गई हूँ
- मुझ आत्मा के अन्दर की हलचल समाप्त हो गई है
- अब मैं आत्मा एक बाप की याद में सदा मगन रह एकरस अवस्था में रहने वाली साक्षीदृष्टा हूँ
- अब मैं आत्मा साक्षीपन की स्टेज पर स्थित होकर हर समय हर बात में बुद्धी की करेक्शन करते है
- बुद्धी की करेक्शन यथार्थ होने के कारण कनेक्शन भी यथार्थ हो जाती है